दो०

देखन मिस मृग विहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि॥

234

अर्थ: मृग, पक्षी और वृक्षोंको देखनेके बहाने सीताजी बार-बार घूम जाती हैं और श्रीरामजी की छवि देख-देखकर उनका प्रेम कम नहीं बढ़ रहा है (अर्थात बहुत ही बढ़ता जाता है।)॥

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥

235

अर्थ: पति इष्टदेव माननेवाली श्रेष्ठ नारियों में हे माता! आपकी प्रथम गणना है। आपकी अपार महिमा को हजारों सरस्वती और शेषजी भी नहीं कह सकते।

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥236

अर्थ: गौरीजी को अनुकूल जानकर सीताजी के हृदय को हर्ष हुआ वह कहा नहीं जा सकता। सुंदर मंगलों के मूल उनके बायें अंग फड़कने लगे।

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ।237

अर्थ: खारे समुद्र में तो इसका जन्म, फिर [उसी समुद्र से उत्पन्न होने के कारण] बिष इसका भाई, दिन में यह मलिन (शोभाहीन, निस्तेज) रहता है और कलंकी [काले दाग से युक्त] है। बेचारा गरीब चन्द्रमा सीता जी के मुख की बराबरी कैसे पा सकता है?।

अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥238

अर्थ: अरुणोदय होने से कुमुदिनी सकुचा गयी और तारागणों का प्रकाश फीका पड़ गया जिस प्रकार आपका आना सुनकर सब राजा बलहीन हो गये हैं।

सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ ॥

अर्थ: शतानन्द जी के चरणों की बन्दना करके प्रभु श्रीरामचन्द्र जी गुरु के पास जा बैठे। तब मुनि ने कहा - हे तात! चलो, जनक जी ने बुलावा भेजा है।

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार